तेरा राज्य आए : युगांत-विद्या का

अध्याय तीन

राजा का आगमन

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2012 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ की सेवकाई के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडिओ अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती है और हमारे अध्यायों के अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती है, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं के टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों, संस्थानों, व्यापारों और लोगों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना 1
मसीह का वापस लौटना 1
अनिवार्यता 2
अब्राहम का उत्तराधिकारी 3
दाऊद का उत्तराधिकारी 5
तरीका 6
व्यक्तिगत 6
शारीरिक 7
दृश्यमान 8
विजयी 9
अंत-समय के चिह्न 11
दिव्य रहस्य 11
महत्वपूर्ण पूर्व-सूचनाएँ 12
शैतानी विरोध 12
मानव विरोध 13
विश्वव्यापी सुसमाचार प्रचार 14
व्याख्यात्मक रणनीतियां 15
सहस्राब्दी 16
ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद 17
युगों-वाला पूर्व-सहस्राब्दवाद 19
उत्तर-सहस्राब्दवाद 20
अ-सहस्राब्दवाद 22
उपसंहार 23

तेरा राज्य आए : युगांत-विद्या का सिद्धांत

अध्याय तीन

राजा का आगमन

प्रस्तावना

जब किसी जोड़े का अपना पहला बच्चा पैदा होने को होता है, तो वे अक्सर पूर्वानुमानित प्रक्रिया से गुजरते हैं। वे बेहद उत्साहित हो जाते हैं। वे बच्चे के लिए सब कुछ तैयार करने की चिंता करते हैं। वे अपने दोस्तों से जिनके पास बच्चे हैं कई प्रश्न पूछते हैं। वे पुस्तकों और लेखों को भी पढ़ सकते हैं। वे गर्भावस्था, जन्म प्रक्रिया, और नए बच्चे की देखभाल के बारे में सब कुछ सीखना चाहते हैं। और हममें से जिनके पास पहले ही से बच्चे हैं वे समझ सकते हैं कि ऐसा क्यों होता है। आपका पहला बच्चा होने से आपका जीवन उन तरीकों में बदल जाता है जो कि नाटकीय, रोमांचक और थोड़ा डरावना हो सकता है। और कुछ ऐसा ही सत्य तब होना चाहिए जब हम अपने प्रभु यीशु के वापस लौटने का इंतजार कर रहे हैं। उसकी वापसी सब कुछ बदलने वाली है। इसलिए, यह समझ में आता है कि जो होने वाला है उसे हम समझना चाहेंगे, और उन तरीकों से जीना चाहेंगे जो उसके पृथ्वी वाले साम्राज्य के लिए हमें तैयार करते हैं। यही कारण है कि हम युगांत-विद्या का अध्ययन करते हैं।

यह हमारी श्रृंखला *तेरा राज्य आए* का तीसरा अध्याय है: *युगांत-विद्या का सिद्धांत,* और हमने इसका शीर्षक रखा है "राजा का आगमन।" इस अध्याय में, मसीह की वापसी या "दूसरे आगमन" और युग के अंत तक ले जाने वाली घटनाओं से इसके संबंध के बारे में बाइबल क्या कहती है, उसका हम पता लगाएंगे।

इससे पहले वाले अध्याय में, हमने एस्केटोलॉजी को "युग के अंत की विद्या" या "अंतिम बातों के सिद्धांत" के रूप में परिभाषित किया था। और हमने कहा था कि व्यक्तिगत युगांत-विद्या है "इस बात का अध्ययन है कि अंतिम दिनों की घटनाओं का व्यक्तिगत मनुष्य कैसे अनुभव करता हैं।" इस अध्याय में, हालांकि, हमारा विषय एक अलग उपश्रेणी मे आता है जिसे "सार्वजनिक युगांत-विद्या" कहा जाता है। सार्वजनिक युगांत-विद्या है:

> अंतिम दिनों में परमेश्वर के न्याय और उद्धार वाले सार्वभौमिक कार्यों का अध्ययन।

यह व्यक्तिगत युगांत-विद्या के जैसे कुछ ऐसे ही मुद्दों को संबोधित करता है। लेकिन यह *घटनाओं* पर जोर देता है बजाय इसके कि कैसे अलग-अलग व्यक्ति घटनाओं का *अनुभव* करते हैं।

"राजा के आगमन" पर हमारी चर्चा तीन भागों में विभाजित होगी। सबसे पहले, हम जाँच करेंगे कि पवित्र शास्त्र मसीह के वापस लौटने के बारे में क्या कहता है। दूसरा, हम अंत-समय के चिह्नों पर विचार करेंगे जो उसकी वापसी की ओर इशारा करते हैं। और तीसरा, हम सहस्राब्दी के लिए प्रमुख सुसमाचारीय दृष्टिकोणों का सर्वेक्षण करेंगे। आइए मसीह के वापस लौटने के साथ शुरू करते हैं।

मसीह का वापस लौटना

स्वर्ग जाने से पहले, पृथ्वी वाली अपनी सेवकाई के अंत के करीब, यीशु ने अपने अनुयायियों को आश्वासन दिया कि वह अंततः वापस लौटेगा। उदाहरण के लिए, हम इसे मत्ती 24, 25 में, उसके जैतून वाले

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रवचन में, और यूहन्ना 14–17 में, उसके विदाई वाले प्रवचन में देखते हैं। फिर, जिस समय वह स्वर्ग पर चढ़ा, तो यीशु ने प्रेरितों को यह याद दिलाने के लिए दो स्वर्गदूतों को भेजा कि वह वापस लौटेगा। जैसा कि लूका ने प्रेरितों के काम 1:10-11 में लिखा:

> उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहने हुए उनके पास आ खड़े हुए। और उनसे कहा, "हे गलीली पुरुषों," तुम क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा" (प्रेरितो के काम 1:10-11)।

नए नियम की कई अन्य पुस्तकें भी यीशु के दूसरे आगमन का उल्लेख करते करती हैं। 1 थिस्सलुनीकियों 3:13 में, पौलुस ने प्रार्थना की कि थिस्सेलुनिके की कलीसिया इसके लिए तैयार रहेगी। और 2 थिस्सलुनीकियों 2:1, 2 में, उसने उन्हें फिर से आश्वस्त किया कि वे इसे भूल न गए हों। इब्रानियों के लेखक ने इब्रानियों 9:28 में, इसे उन लोगों के उद्धार के साथ जोड़ा जो यीशु की प्रतीक्षा करते थे। 2 पतरस 3:4-10 में, पतरस ने इसको संसार के अंत और नवीनीकरण के रूप में वर्णित किया। और प्रकाशितवाक्य 22:12 में, यूहन्ना के भविष्यसूचक दर्शन में, यीशु ने यूहन्ना से उसके वापस लौटने तक वफादर बने रहने को कहा। पृथ्वी पर यीशु की वापसी को पूरे नए नियम में सिखाया गया है, और यह हमेशा से मसीही ईश्वरीय-ज्ञान में विश्वास का एक केंद्रिय विषय रहा है।

> यीशु वापस आ रहा है; उसने हमें बाइबल में बताया कि वह वापस आ रहा है। हम ऊपरी कोठरी में उसके वचनों को देख सकते हैं; हम पत्रों में प्रेरितों, पौलुस, पतरस, यूहन्ना की, और विशेष कर प्रकाशितवाक्य की शिक्षा को देख सकते हैं। इस तरह, यह पवित्र शास्त्र का एक तथ्य है कि यीशु युग के अंत में वापस लौटेगा। और यह हमारे लिए महान आशा है क्योंकि, विश्वासियों के रूप में, हम अपने उद्धारकर्ता को देखना चाहते हैं, और जब वह वापस आता है, तो वह ऐसा समय है जब मृत्यु हमारे अनुभव से पूरी तरह से हटा दी जाएगी, हमें आत्मा और शरीर में सिद्धता के साथ पवित्र बनाया जाएगा, और हम यीशु की उपस्थिति के साथ सभी संतों और पवित्र स्वर्गदूतों की संगति में हमेशा के लिए रहेंगे। इसलिए, हम न सिर्फ यह स्वीकार करते हैं कि यीशु वापस आ रहा है, लेकिन हम उत्साह और उत्सुकता के साथ ऐसा करते हैं।
>
> — डॉ. गाय वॉटर्स

इस अध्याय में, हम मसीह के वापस लौटने के दो पहलूओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे: पहला है, वह अनिवार्यता कि वह लौटे; और दूसरा, वह तरीका जिसमें वह लौटेगा। आइए यीशु के दूसरे आगमन की अनिवार्यता को पहले देखें।

अनिवार्यता

संसार के सौभाग्यशाली भागों में रहने वाले मसीही लोग, मसीह की वापसी के बारे में बहुत ज्यादा चिंता नहीं करते हैं। वे इस जीवन का आनंद लेने में बहुत हद तक संतुष्ट हैं, और मध्यवर्ती अवस्था के दौरान स्वर्ग में जीवन जीने की बाट जोहते हैं। मरकुस 10:21-25, में धनी जवान के समान, उनका धन उस राज्य पर

पर्याप्त महत्व देना उनके लिए कठिन बना देता है, जिसे यीशु लौटने पर परिपूर्ण करेगा। लेकिन संसार के दूसरे भागों में, मसीही लोग अपने विश्वास के लिए कष्ट भोगते हैं। इसलिए, उनके लिए उस आदर्श संसार की बाट जोहना आसान है जिसे यीशु लाएगा। उन्हें मसीह के दूसरे आगमन की अनिवार्यता को पहचानने में कतई भी मुश्किल नहीं होती है।

> यीशु के लिए वापस लौटना अनिवार्य है, क्योंकि परमेश्वर का काम पूरा नहीं हुआ है। परमेश्वर की योजना पूरी नहीं हुई है। सृष्टि हुई, पाप में पतन हुआ, मसीह में उद्धार हुआ, और अब परिपूर्णता होएगी। इतिहास समाप्त होने को है। परमेश्वर सब चीजों को समेटने पर है। सभी चीज़ों को जो गलत हैं, सही की जाएंगी। और मसीह ने *प्रतिज्ञा* की है कि वह वापस लौटेगा। यूहन्ना 14 में वह कहता है कि वह हमारे लिए एक जगह तैयार करने जा रहा है, और यदि वह हमारे लिए जगह तैयार करने को जाता है, तो वह फिर आएगा और हमें अपने साथ ले जाएगा। मसीह, जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए भी वापस आ रहा है ... कई ऐसे कारण हैं कि मसीह का वापस लौटना महत्वपूर्ण है, उनमें से एक जो महत्वपूर्ण है वह, कि मसीह की वापसी मसीह के पुनरुत्थान की परिपूर्णता के समान है। वह जी उठा *है*। हाँ वह जी उठा है। लेकिन वह जी उठा है *ताकि वह फिर से आ सके*। और यही वह बात है जिसे हम प्रभु भोज में कहते हैं। ठीक है? "क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।" यह सुसमाचार के संदेश के लिए सबसे महत्वपूर्ण है।
>
> — डॉ. वोडी बॉशम, जूनियर

मसीह की वापसी की अनिवार्यता के लिए कई कारण हैं। लेकिन हमारे उद्देश्यों के लिए, हम अब्राहम के उत्तराधिकारी के रूप में उसकी भूमिका, और दाऊद के उत्तराधिकारी के रूप में उसकी भूमिका पर ध्यान केंद्रित करेंगे। आइए अब्राहम के उत्तराधिकारी के रूप में मसीह की भूमिका को पहले देखें।

अब्राहम का उत्तराधिकारी

उत्पत्ति 15, 17 में, अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा में शामिल था, अब्राहम और उसके वंशजों के लिए एक देश। और इन दोनों ही अध्यायों में, उस देश को विशेष रूप से कनान के रूप में पहचाना गया है। वास्तव में, यही वह कारण है कि बाइबल और धर्मविज्ञानी कनान को "प्रतिज्ञा किए हुए देश" के रूप में संदर्भित करते हैं। लेकिन उत्पत्ति 17:5 में, परमेश्वर ने यह भी प्रतिज्ञा की कि अब्राहम बहुत राष्ट्रों का मूलपिता होगा। दूसरे शब्दों में, जबकि उसकी विरासत में कनान उसके मुख्य स्थान के रूप में *शामिल* होगा, लेकिन यह कनान तक ही *सीमित* नहीं होगा। रोमियों 4:13 में, पौलुस ने इस प्रतिज्ञा की व्याख्या इस अर्थ में की, कि पूरा संसार अब्राहम और उसके वंशजों की विरासत होगा।

इसके अलावा, उत्पत्ति 17 की घटनाओं के कई वर्षों बाद, परमेश्वर ने मोरिय्याह पर्वत पर अब्राहम के साथ अपनी वाचा की पुष्टि की। उस समय पर, परमेश्वर ने अब्राहम को उसके पुत्र इसहाक को होमबलि के रूप में परमेश्वर को चढ़ाने के लिए आज्ञा देकर उसकी परीक्षा की थी। दो कारणों से यह एक चौंकाने वाली आज्ञा थी। सबसे पहला, कि परमेश्वर ने इससे पहले मानव बलिदान की माँग नहीं की थी। और दूसरा, उत्पत्ति 17 में, इसहाक की पहचान अब्राहम की वाचा वाली प्रतिज्ञाओं के वारिस के रूप में की गई थी। इसलिए, यदि

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इसहाक मरता है, तो परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ विफल होते प्रतीत होंगे। लेकिन अंतिम क्षण में, परमेश्वर ने इसहाक को मृत्यु से बचा लिया। और फिर परमेश्वर ने अब्राहम के साथ अपनी वाचा की पुष्टि उस तरीके में की, जो यह सुनिश्चित करता है कि परमेश्वर की वाचा वाली सभी आशीषें अब इसहाक के माध्यम से साकार की जाएंगी। और परमेश्वर ने वाचा की शब्दावली में और विस्तार किया, ताकि यह स्पष्ट रूप से *पूरे संसार* को शामिल करे। उत्पत्ति 22:17-18 में, परमेश्वर ने अब्राहम से कहा:

> तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा, और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी (उत्पत्ति 22:17-18)।

मूल इब्रानी भाषा में, ये प्रतिज्ञाएँ इसहाक को संदर्भित करते हैं, जो एक प्रारूप या पूर्वाभास था जिसने मसीह का पूर्वचित्रण किया। पहला, जिस शब्द का अनुवाद वंशज और संतान किया गया, वह "ज़ेरह" है, जिसका अर्थ है "बीज।" अब, अपने एकवचन वाले रूप में, *ज़ेरह* बीजों की बड़ी संख्या का भी उल्लेख कर सकता है। लेकिन इस मामले में, यह क्रिया "*याराश*" का एकवचन रूप लेता है, जिसका अनुवाद यहाँ "अधिकारी होगा" है, और स्वत्वात्माक सर्वनाम का एकवचन रूप जिसका अनुवाद यहाँ पर "अपने" है। तो, इस अनुच्छेद का ज्यादा शाब्दिक अनुवाद होगा:

> तेरा वंशज अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा, और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंशज के कारण धन्य मानेंगी (उत्पत्ति 22:17-18)।

दूसरे शब्दों में, अब्राहम की वाचा वाली प्रतिज्ञाएँ उसके विशेष वंशज इसहाक के माध्यम से साकार होंगी। और इन प्रतिज्ञाओं में प्रतिज्ञा किए हुए देश को अधिकार में लेना और उस अधिकार को सभी राष्ट्रों तक विस्तारित करना शामिल है।

इसहाक के दिनों में यह आशा थी कि वह उस देश में रहेगा जिसे उसने जीता था। बेशक, जैसे-जैसे इतिहास आगे बढ़ा और परमेश्वर ने अपनी योजना का और अधिक खुलासा किया, तो यह स्पष्ट हो गया कि इसहाक के लिए प्रतिज्ञाएँ अंततः उसके वंशज यीशु के माध्यम से पूरे होंगी। यीशु को परमेश्वर के लिए एक मानव बलिदान के रूप में भी चढ़ाया जाएगा। लेकिन इस बार अंतिम क्षणों वाला बचाव नहीं होगा। जिस तरह अब्राहम की आज्ञाकारिता ने इसहाक को परमेश्वर के वाचा वाले लोगों के शासक के रूप में स्थान दिलाया था, यीशु की अपनी आज्ञाकारिता उसे वही अधिकार अर्जित कराएगी। और यीशु उनके बीच उन देशों में रहने के द्वारा जिन्हें उसने जीता है, व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक देश को आशीषित करेगा।

अब्राहम और इसहाक से की गई प्रतिज्ञाएं, उन कारणों में से एक है कि यीशु का वापस लौटना अनिवार्य है। परमेश्वर ने शपथ ली कि अब्राहम के वंशजों में से एक उसके शत्रुओं को पराजित करेगा और *पूरे संसार* को उसके निवास के रूप में अधिकार में लेगा। और नया नियम इस बात को स्पष्ट करता है कि यीशु वह वंशज है जिसके माध्यम से ये प्रतिज्ञाएँ साकार होंगी। लेकिन अपने शत्रुओं के क्षेत्र पर कब्जा करने के लिए, और उस संसार में रहने के लिए जिस पर उसने जीत हासिल की, यीशु को यहाँ होना है — पृथ्वी पर। उसे व्यक्तिगत रूप से वापस आना है, ताकि अब्राहम और इसहाक को दी गई प्रतिज्ञाएँ पूरी की जा सकें।

अब्राहम के उत्तराधिकारी के रूप में लौटने के लिए यीशु की अनिवार्यता के अलावा, उसे इसलिए भी लौटना है क्योंकि वह दाऊद का उत्तराधिकारी भी है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दाऊद का उत्तराधिकारी

जैसा कि हमने पहले अध्याय में देखा, यशायाह 9:7 हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञा को बताता है, कि दाऊद के वंशजों में से एक इस्राएल पर सर्वदा के लिए राज करेगा। हम ऐसे ही विचारों को 2 शमूएल 7:16, और यहेजकेल 37:24-28 में देखते हैं। और दानिय्येल 7:14 इस विवरण को जोड़ता है कि दाऊद का उत्तराधिकारी वास्तव में राज करेगा, और "देश-देश और जाति-जाति के लोगों और भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वालों" के द्वारा उसकी आराधना की जाएगी। लेकिन एक स्थायी, विश्वव्यापी, सांसारिक साम्राज्य को स्थापित करने से दूर, यीशु ने अपनी पृथ्वी वाली सेवकाई के दैरान दाऊद की राजगद्दी को भी पुनः स्थापित नहीं किया। और निश्चित रूप से अभी तक पृथ्वी पर सभी लोगों के द्वारा उसकी आराधना नहीं की जाती है।

अब यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि यीशु पहले ही से स्वर्ग और पृथ्वी के ऊपर राजा के रूप में राज्य कर रहा है। स्वर्ग पर जाने से ठीक पहले, उसने अपने शिष्यों को बताया कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार उसका है। मत्ती 28:18 में, उसने कहा:

> स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।

यीशु स्वर्ग और पृथ्वी दोनों के ऊपर राजा है; उसके पास *सारा* अधिकार है। इफिसियों 1:20-22 में पौलुस ने इस बारे में बात की। उसने समझाया कि मसीह स्वर्ग में राज करता है, और यह कि उसकी शाही पदवी दोनों इस युग में और आने वाले युग में किसी भी अन्य उपाधि से ऊपर है जो दिया जा सकता है। और पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:25, और कुलुस्सियों 2:10 सहित, कई अन्य स्थानों में इस विचार को दोहराया।

लेकिन वर्तमान समय पर, यीशु का सिंहासन स्वर्ग में है, न कि पृथ्वी पर। इसलिए, दाऊद के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पूरी करने, इस्राएल के ऊपर दाऊद की राजगद्दी को पुनः-स्थापित करने, और वहाँ से, सर्वदा के लिए पूरी पृथ्वी पर राज करने के लिए, यीशु को अभी भी पृथ्वी पर वापस लौटना है। जैसा कि स्वर्गदूत ने यीशु की माता मरियम को लूका 1:32-33 में बताया:

> प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा, और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा, और उसके राज्य का अन्त न होगा (लूका 1:32-33)।

इसी तरह, मत्ती 25:31-46 में, यीशु ने स्वयं विशेष रूप से उल्लेख किया कि जब वह दुष्टों और धर्मियों पर शाही फैसले देते हुए अपने सिंहासन पर बैठता है, तो वह सिंहासन पृथ्वी पर होगा। मत्ती 25:31-32 को सुनिए जहाँ यीशु ने यह कहा:

> जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएँगे, तो वह अपनी स्वर्गीय महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। और सब जातियाँ उसके सामने इकट्ठा की जाएँगी, और जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा (मत्ती 25:31-32)।

यह चित्र यीशु का है जो तेजस्वी महिमा में — या "स्वर्गीय महिमा में" — स्वर्ग से उतर रहा है, और विजय प्राप्त करने वाले स्वर्गदूतों की सेनाओं द्वारा उसकी सेवा की जा रही है। और वह कहाँ आ रहा है? पृथ्वी पर, जहाँ वे राष्ट्र स्थित हैं जिनका न्याय करने की योजना उसने बनाई।

सभी मसीही लोगों को मसीह के पृथ्वी वाले भविष्य के शासन के लिए उत्सुकता से इंतजार करना चाहिए जो तब शुरू होगा जब वह वापस लौटेगा। हम इस आशा को प्रकाशितवाक्य में नए यरूशलेम के प्रेरित

यूहन्ना के दर्शन में प्रतिबिंबित होता देखते हैं। और यिर्मयाह 3:17 में यरूशलेम के बारे में यिर्मयाह की भविष्यवाणियों में, और यिर्मयाह 17:25 और 33:17-22 में दाऊद के वंश वाले राजाओं के बारे में उसके वचनों में, यह प्रदर्शित है। यह यीशु का और नए नियम में जो उसके पीछे चले उनका विश्वास एवं उनकी आशा थी, और यही हमारा विश्वास एवं हमारी आशा भी होनी चाहिए।

मसीह के वापस लौटने की अनिवार्यता को देख लेने के बाद, हम उसके वापस आने के तरीके पर विचार करने के लिए तैयार हैं।

तरीका

परमेश्वर के पृथ्वी वाले राज्य को परिपूर्ण करने के लिए यीशु के पास कई महत्वपूर्ण कार्य पूरे करने के लिए बचे हैं — और वह इन कार्यों को व्यक्तिगत रीति से पूरा करेगा। इसलिए, हम जानते हैं कि वह वापस आ रहा है। लेकिन वह *कैसे* वापस आ रहा है? यह किस तरह का दिखाई देगा? और हम उसे कैसे पहचानेंगे? सबसे सरल शब्दों में, यीशु सारी सृष्टि के ऊपर विजयी, जीत प्राप्त करते हुए राजा के रूप में स्वर्ग से उतरेगा।

हम मसीह के वापस लौटने के तरीके के चार पहलूओं का उल्लेख करेंगे। यह व्यक्तिगत, शारीरिक, दृश्यमान, एवं विजयी होगा। आइए इस तथ्य को पहले देखें कि यह व्यक्तिगत होगा।

व्यक्तिगत

जैसा कि हमने देखा, अब्राहम और दाऊद को दी गई प्रतिज्ञाओं को पूरा करने हेतु यीशु के लिए व्यक्तिगत रूप से पृथ्वी पर वापस लौटना आवश्यक है। राज्य के अगले चरण को प्रभावित करने के लिए, वह सिर्फ अपने पवित्र आत्मा को नहीं भेजगा, हालांकि पवित्र आत्मा निश्चित रूप से शामिल रहेगा। और वह सिर्फ अपनी कलीसिया के माध्यम से कार्य नहीं करेगा, हालांकि हम निश्चित रूप से उन घटनाओं में भाग लेंगे जो उसके राज्य को परिपूर्ण करते हैं। उसकी वापसी एक रूपक नहीं है जिसका उपयोग नया नियम खोए हुओं के बड़े पैमाने पर मन फिराव, या सभी राष्ट्रों में शांति प्रसार, या पूरे संसार में कलीसिया की जीत का वर्णन करने के लिए करता है। वास्तव में, यह रूपक तो बिल्कुल भी नहीं है। अपने कार्य को पूरा करने के लिए यीशु वास्तव में — व्यक्तिगत रूप में — वापस आ रहा है।

जब यीशु मृतकों में से जी उठा, लेकिन स्वर्ग में आरोहण से पहले, उसने परमेश्वर के राज्य के बारे में अपने विश्वासयोग्य प्रेरितों को शिक्षा देने में 40 दिन बिताए। फिर, प्रेरितों के काम 1:4, 5 में, उसने समझाया कि सेवकाई के लिए कलीसिया को सशक्त करने हेतु वह पवित्र आत्मा को भेजने जा रहा है। इसके प्रत्युत्तर में, प्रेरितों के काम 1:6 में, प्रेरितों ने उससे पूछा:

> **हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल को राज्य फेर देगा? (प्रेरितों के काम 1:6)।**

यह प्रश्न एक महत्वपूर्ण धारणा को उजागर करता है, विशेष रीति से, कि स्वयं यीशु राज्य को इस्राएल के लिए पुनःस्थापित करेगा।

प्रेरितों को स्वाभाविक रूप से आश्चर्य होता है कि क्या यीशु के अन्य युगांतरकारी कार्य उनके द्वारा पवित्र आत्मा को ग्रहण करने के बाद तुरंत पूरे होंगे। लेकिन यीशु ने उन्हें इस समय-निर्धारण के बारे में अटकलें नहीं लगाने के लिए कहा, और उन्हें सिर्फ दोबारा आश्वस्त किया कि पवित्र आत्मा उनकी सेवकाईयों को सशक्त करेगा। इसके तुरंत बाद, वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तो, इस समय प्रेरित लोग क्या सोच रहे थे? शायद यह कहना ठीक रहेगा कि वे सोच रहे थे कि राज्य को सम्भवतः कैसे पुनःस्थापित किया जा सकता है जबकि वह व्यक्ति जिसे इसको पुनःस्थापित करना चाहिए था वह अभी-अभी स्वर्ग पर चढ़ गया है। वास्तव में, इसके एकदम बाद वाले पद सुझाव देते हैं कि यही मामला था। जैसे कि कहानी जारी रहती है, दो स्वर्गदूत प्रगट हुए और उन्होंने प्रेरितों को बताया कि यीशु सम्भवतः पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को परिपूर्ण करने के अपने कार्य को समाप्त करने के लिए, *व्यक्तिगत* रूप से भविष्य में वापस आएगा। जैसे कि हमने प्रेरितों के काम 1:11 में पहले पढ़ा था, स्वर्गदूतों ने प्रेरितों से पूछा:

> हे गलीली पुरुषों ... तुम क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा (प्रेरितो के काम 1:11)।

यह तथ्य कि यीशु चला गया इसका अर्थ यह नहीं है कि वह राज्य को पुनःस्थापित करने के बारे में भूल गया था। इसके विपरीत, वह अपने सांसारिक राज्य को पूरा करने के लिए व्यक्तिगत रीति से वापस आ रहा था। प्रेरित पतरस इस वास्तविकता से इतना आश्वस्त था कि यह उसकी सुसमाचार प्रस्तुति का हिस्सा बन गया। प्रेरितों के काम 3:21 में पतरस ने भीड़ से जो कहा उसे सुनिए:

> अवश्य है कि [यीशु] स्वर्ग में उस समय तक रहे जब तक कि परमेश्वर सब बातों का सुधार न कर ले (प्रेरितों के काम 3:21)।

नए नियम के कई अन्य लेखकों एवं व्यक्तियों ने भी यह तर्क दिया कि यीशु पृथ्वी पर परमेश्वर के मसीहा वाले राज्य को परिपूर्ण करने के लिए व्यक्तिगत रूप से वापस आएगा। लेकिन यह विचार शायद पौलुस के लेखन में सबसे आम है। उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों 15:23, और फिलिप्पियो 3:20, 21 जैसे स्थानों में, पौलुस ने मसीह की व्यक्तिगत वापसी को विश्वासियों के पुनरुत्थान के साथ जोड़ा। 2 तिमुथियुस 4:8 में, उसने कहा कि परमेश्वर उन सभी को इनाम देगा जो उत्सुकता से मसीह के वापस लौटने का इंतजार करते हैं। और तीतुस 2:12-14 में, उसने धर्मी जीवन जीने के महत्व के साथ यीशु की व्यक्तिगत वापसी को जोड़ा।

यह देखने के बाद कि मसीह की वापसी का तरीका व्यक्तिगत होगा, आइए इस विचार का पता लगाएं कि उसकी वापसी में शारीरिक घटक शामिल होगा।

शारीरिक

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब यीशु स्वर्ग पर चढ़ा तो उसने अपनी मानवता को नहीं त्यागा था। वह एक व्यक्ति है — त्रीएक परमेश्वर का दूसरा व्यक्ति। लेकिन उसके दो स्वभाव हैं: ईश्वरीय स्वभाव और मानवीय स्वभाव। अपने ईश्वरीय स्वभाव में, यीशु पृथ्वी पर पहले ही से हर जगह मौजूद है एवं कार्य कर रहा है। लेकिन उसके पास पूरा करने के लिए मानवीय कार्य भी बाकी है। और उसके लिए, उसे अपने शरीर सहित अपने संपूर्ण मानवता में वापस लौटना है। उदाहरण के लिए, सिर्फ अपने मानवीय स्वभाव के अनुसार, वह अब्राहम और दाऊद वाली वाचा का वारिस है। परिणामस्वरूप, अब्राहम और दाऊद के लिए दी गई प्रतिज्ञाएँ सिर्फ उसकी *मानवता* के द्वारा *ही* पूरी की जा सकती हैं।

इसी तरह से, प्रेरितों के काम 3:20-22 में लूका ने तर्क दिया कि मूसा के समान भविष्यद्वक्ता के रूप में अपने कार्य को पूरा करने के लिए यीशु को अपने मानवीय स्वभाव में वापस लौटना अवश्य है। और बेशक,

उसके स्वर्गारोहण के समय स्वर्गदूतों ने कहा कि वह शारीरिक रूप में वापस आएगा। प्रेरितों के काम 1:11 को याद कीजिए, जहाँ स्वर्गदूत ने प्रेरितों को बताया:

> यही यीशु, ... जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा (प्रेरितों के काम 1:11)।

प्रेरितों ने यीशु को मानव रूप में स्वर्ग जाते हुए देखा, और उन्हें बताया गया कि वे उसे उसी तरह लौटते हुए देखेंगे। इसका अर्थ सिर्फ यह हो सकता है कि वह अपने मानव शरीर में वापस लौटेगा। इसके अलावा, कई अनुच्छेद हमारे महिमामय शरीर की तुलना उस महिमामय मानव शरीर के साथ करते हैं जो यीशु के पास तब भी होगा जब वह वापस आता है। और इसका अर्थ है कि वह उतना ही शारीरिक होगा जितना कि हम होंगे। हम इसे 1 कुरिन्थियों 15:20-23, and फिलिप्पियो 3:20, 21 जैसे स्थानों में देखते हैं। नया नियम लगातार सिखाता है कि जब यीशु वापस लौटता है तो वह अपने महिमामय शारीरिक मानव शरीर में दिखाई देगा — वही शरीर जो मृतकों में जी उठा और स्वर्ग पर चढ़ गया।

अब जबकि हमने देख लिया है कि कैसे यीशु की वापसी का तरीका व्यक्तिगत और शारीरिक होगा, आइए इस तथ्य को संबोधित करें कि यह दृश्यमान भी होगा।

दृश्यमान

यह कहना स्पष्ट प्रतीत हो सकता है कि जब यीशु अपने महिमामय शरीर में वापस लौटेगा, तो हम उसे देख पाएंगे। लेकिन वास्तव में कुछ गलत शिक्षा वाले संप्रदाय हैं जो यीशु के दृश्यमान वाली वापसी से इनकार करते हैं। अकसर, यह इनकार इस गलत धारणा से उपजता है कि यीशु पहले ही वापस लौट आया है। और चुंकि किसी ने इस वापसी को नहीं देखा, वे तर्क देते हैं कि यह अदृश्य था। इस त्रुटि के साथ सबसे स्पष्ट समस्याओं में से एक यह है कि नया नियम स्पष्ट रूप से कहता है कि जब यीशु वापस लौटेगा तो उस को देखा जाएगा। उदाहरण के लिए, 1 यूहन्ना 3:2 में, यूहन्ना ने लिखा:

> जब वह प्रगट होगा ... उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है (1 यूहन्ना 3:2)।

और प्रकाशितवाक्य 1:7 में, यूहन्ना ने भविष्यवाणी की:

> देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है, और हर एक आँख उसे देखेगी (प्रकाशितवाक्य 1:7)।

और मत्ती 24:27-30 में, यीशु ने स्वयं अपने दूसरे आगमन का वर्णन इस तरीके से किया:

> क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती है, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा ... पृथ्वी के सब कुलों के लोग ... मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे (मत्ती 24:27-30)।

आखिरी के दो अनुच्छेद विशेष रूप से मददगार हैं क्योंकि वे संकेत देते हैं कि यीशु सिर्फ कुछ ही लोगों के लिए दृश्यमान नहीं होगा। पृथ्वी पर हर कोई उसे देखेगा। और इसका कारण समझने में मुश्किल नहीं है: यीशु की वापसी पृथ्वी को हिला देने वाली घटना होगी। उसकी महिमा की चमक सूर्य के समान होगी, और उसकी स्वर्गीय सेना आकाश को भर देंगी। और फिर प्रत्येक मनुष्य को उसके न्याय सिंहासन पर उसका सामना करना होगा। जैसा कि यीशु ने मत्ति 16:27 में सिखाया:

> मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा (मत्ती 16:27)।

> नया नियम हमें बताता है कि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती है, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा; यह सुझाव देता है कि यह अत्यधिक दृश्यमान होने जा रहा है और वास्तव में कुछ ऐसा है कि इससे छूट जाना असंभव है। और पौलुस की पत्रियों की भाषा में, वह एक बड़े शोर और तुरही की आवाज़ के साथ मसीह के दूसरे आगमन की बात करता है। फिर, ये ऐसी बातें हैं जो मुझे सुझाव देती हैं कि दूसरा आगमन कुछ ऐसा है जिससे हम चाहकर भी बच नहीं सकते, यह लीक से हट कर परमेश्वर का कार्य यह सुनिश्चित करने के लिए है, कि हम इस प्रलय रूपी, ऐतिहासिक घटना को देखें। इसलिए, मैं कहूँगा कि यह पूरी तरह से दृश्यमान, दिखाई देने वाला है, और मसीह की वापसी के समय तक पृथ्वी पर जीवित कोई भी मनुष्य इसे देखने से बच नहीं सकता है।
>
> — रेव्ह. डैन हेन्डले

अभी तक हमने मसीह की वापसी के तरीके को व्यक्तिगत, शारीरिक, और दृश्यमान रूप में वर्णित किया है। अब आइए देखते हैं कि यह कैसे विजयी भी है।

विजयी

अपने पहले आगमन के दौरान, यीशु विजयी होने के अलावा बाकी सब कुछ दिखाई दिया था। वह एक गरीब, दीन परिवार में पैदा हुआ था। उसने कभी भी राजनीतिक या सैन्य शक्ति को हासिल नहीं किया। और मृत्यु में, उसने स्वयं को एक अपराधी के रूप में दोषी ठहराए जाने और मारे जाने की अनुमति दी। जैसा कि पौलुस ने फिलिप्पियों 2:7-8 में लिखा:

> [यीशु ने] अपने आप को ऐसा शुन्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, — हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली! (फिलिप्पियों 2:7-8)।

"अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया" वाक्यांश में यूनानी क्रिया "*केनू*" है। यहाँ पर इसका उपयोग धर्मविज्ञान वाले शब्द "केनोसिस" के लिए आधार है जो कि यीशु के पहले आगमन के दौरान उसकी दिव्य महिमा पर पर्दा डालने का यीशु का कार्य है।

कुछ व्याख्याकारों ने यीशु के केनोसिस को कुछ ही दिव्य गुणों की कमी के रूप में समझा है। लेकिन परमेश्वर, परमेश्वर होने से बच नहीं सकता। वह — स्वेच्छा से भी — अपने एक भी दिव्य गुणों को नहीं छोड़ सकता था। इसके बजाय, विशेषकर देहधारण और जो दुःख उसने सहा उसके माध्यम से, यीशु का केनोसिस उसकी महिमा को *छिपाने* में शामिल था। लेकिन जब वह मृतकों में से जी उठा और स्वर्ग पर चढ़ गया, तो उसका केनोसिस समाप्त हो गया। उस समय पर, यीशु की महिमा को प्रगट करने के लिए जिसे उसने परमेश्वर के रूप में हमेशा से धारण किया था, पिता ने उस पर्दे को वापस हटा दिया। जिस तरह से यीशु ने यूहन्ना 17:5 में प्रार्थना की:

> अब हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर, जो जगत की सृष्टि से पहले, मेरी तेरे साथ थी (यूहन्ना 17:5)।

यीशु की महिमा को फिर कभी ढांपा नहीं गया। और जब वह वापस लौटता है, तो यह पूरे भव्य प्रदर्शन पर होगा। वह तेजस्व और भव्यता में, आकाश के बादलों की सवारी करता हुआ, और स्वर्गूदतों की सेना के साथ वापस आएगा। मत्ती 24:30 कहता है कि वह "सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ" आएगा। पहला थिस्सलुनीकियों 4:16 हमें बताता है कि "प्रधान स्वर्गदूत के शब्द के साथ और परमेश्वर की तुरही के फूँके जाने के साथ" उसके आने की घोषणा की जाएगी। दूसरा थिस्सलुनीकियों 1:7 हमें बताता है कि वह धधकती हुई आग और सामर्थी दूतों की सेनाओं के साथ आएगा। और प्रकाशितवाक्य 19:11-16 हमें बताता है कि उसे बहुत से राजमुकुट पहनाए जाएंगे, स्वर्ग की सेनाएं उसके पीछे पीछे चलेंगी, और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए राष्ट्रों पर राज्य करेगा। संक्षेप में, अपनी सेनाओं की जीत में अगुवाई करते हुए एक विजयी राजा के रूप में उसका आगमन होगा। और उसके सामर्थ्य एवं अधिकार से सामने प्रत्येक व्यक्ति झूकेगा। फिलिप्पियों 2:9-11 को सुनिए, जहाँ पौलुस ने यीशु के केनोसिस के परिणाम का वर्णन किया:

> इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें, और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है (फिलिप्पियों 2:9-11)।

यही वह अंतिम निर्णायक विजय है। जब यीशु वापस लौटता है और अपने शत्रुओं को हराता है, तो उसका विरोध करने के लिए कोई भी छोड़ा नहीं जाएगा। हर कोई, बिना अपवाद के, उसके आगे झूकेगा और उसकी महानता को, और उसके शासन की अधीनता को स्वीकार करेगा। प्रकाशितवाक्य 22:3-5 सिखाता है कि उसका सिंहासन नए यरूशलेम में होगा, जहाँ उसकी महिमा का तेज इतना अधिक होगा कि नगर को दीपक और सूर्य की भी जरूरत नहीं होगी। और प्रकाशितवाक्य 11:15 इंगित करता है कि उसका स्वर्गीय राज्य पूरे संसार को ढांपने के लिए फैल जाएगा।

विश्वासियों के रूप में, मसीह का भविष्य में शारीरिक रूप में लौटना हमारी सबसे बड़ी आशाओं में से एक है। जब मसीह लौटता है, तो सृष्टि को सिद्ध किया जाएगा और परमेश्वर की महिमा पूरे संसार भर में दिखाई देगी। उस समय तक, उन तरीकों से जीना हमारे कर्तव्यों का एक हिस्सा है जो उस अंतिम निर्णायक विजय की आशा रखते एवं घोषणा करते हैं। अपने राजा का सम्मान करने, और उसके आगमन के लिए उसके राज्य को तैयार करने के लिए, हमें पवित्र बनना है। लेकिन कुछ मायनों में, उसकी देरी के लिए हमें आभारी भी होना चाहिए। क्यों? क्योंकि यीशु के रुकने का हर एक दिन उसके शत्रुओं के लिए पश्चाताप करने का एक अवसर है, ताकि वे उसकी क्षमा को अभी और उसकी अनंत आशीषों को जब वह वापस लौटता है तो प्राप्त करें।

अब जबकि हमने मसीह की वापसी के संबंध में राजा के आगमन पर विचार कर लिया है, आइए अपने दूसरे प्रमुख विषय को संबोधित करें: अंत-समय के चिह्न।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अंत-समय के चिह्न

जब हम "अंत-समय के चिह्न" की बात करते हैं, तो हमारे ध्यान में वे घटनाएँ हैं जो परमेश्वर के युगांतरकारी समयरेखा की प्रगति को इंगित करते हैं। जैसा कि हमने पहले वाले अध्याय में देखा, "अंतिम दिन" या "अंतिम समय" तीन चरणों में उजागर होते हैं: पृथ्वी पर मसीहा वाले परमेश्वर के राज्य का *उद्घाटन,* जो यीशु के पहले आगमन के दौरान घटित हुआ; राज्य की *निरंतरता,* जिसमें हम अभी रहते हैं; और राज्य की भविष्य में *परिपूर्णता* जो यीशु के वापस लौटने पर घटित होगा। हमारे अध्याय के इस भाग में, हमारा संबंध मुख्यतः मसीह की महिमामय वापसी के लिए चिह्नों के साथ है।

हम तीन भागों में अंत-समय के चिह्नों पर चर्चा करेंगे। सबसे पहले, हम देखेंगे कि मसीह की वापसी का समय एक दिव्य रहस्य है। दूसरा, हम मसीह की वापसी के कुछ महत्वपूर्ण पूर्व-सूचनाओं पर प्रकाश डालेंगे। और तीसरा, हम कुछ व्याख्यात्मक रणनीतियों की पहचान करेंगे जिनका उपयोग धर्मविज्ञानियों ने इन पूर्व-सूचनाओं को समझाने के लिए किया है। आइए इस तथ्य के साथ शुरू करें कि कि मसीह की वापसी का समय एक दिव्य रहस्य है।

दिव्य रहस्य

मत्ती 24:3 में, यीशु के शिष्य उससे पूछते हैं:

> ये बातें कब पूरी होंगी, और तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिह्न होगा? (मत्ती 24:3)।

इससे पहले कि वे उससे यह प्रश्न पूछते, शिष्यों को एहसास हुआ कि यीशु थोड़ी देर के लिए उन्हें छोड़कर जा रहे हैं और फिर वापस आएंगे। और वे जानते थे कि जब तक वह वापस न लौटेगा तब तक वह पृथ्वी पर परमेश्वर के मसीहा वाले राज्य को परिपूर्णता में लाने वाला नहीं है। लेकिन वे फिर भी आश्चर्य करते हैं कि ये बाते *कब* पूरी होंगी।

इस प्रश्न के उत्तर में, यीशु ने उन चिह्नों के बारे में उन्हें बताया जो उसकी वापसी से पहले होंगे। मत्ती 24:27-30 में, उसने कहा कि सूर्य और चन्द्रमा अंधियारा हो जाएगा, और फिर वह बादलों पर आता और बड़े ऐश्वर्य की चमक के साथ आकाश में दिखाई देगा। लेकिन उसने उन्हें यह नहीं बताया कि यह कब पूरा होगा। वास्तव में, वह उन्हें बता *नहीं सकता* था क्योंकि यह एक दिव्य रहस्य था जिसे वह भी नहीं जानता था। जैसा कि उसने मत्ती 24:36 में कहा:

> उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र, परन्तु केवल पिता (मत्ती 24:36)।

अपने मानवीय स्वभाव के दृष्टिकोण से, यहाँ तक कि यीशु को भी नहीं पता था कि वह कब वापस लौटेगा! अफसोस की बात है कि पूरे इतिहास में कई धर्मविज्ञानियों ने स्वयं को यीशु की तुलना में ज्यादा समझदार और बेहतर रीति से सूचित समझा है, और उसकी वापसी की तारीखों को निर्धारित करने की कोशिश की है। लेकिन वे सभी गलत साबित हुए हैं। जैसा कि यीशु ने मरकुस 24:42-44 में कहा:

> इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन वापस आएगा ... जिस घड़ी के विषय तुम सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा (मत्ती 24:42-44)।

मत्ती 25:13, मरकुस 13:32, 33, लूका 12:40, 1 थिस्सलुनीकियों 5:2, और 2 पतरस 3:10 सहित कई अन्य अनुच्छेद इस बात की पुष्टि करते हैं कि यीशु की वापसी का समय अनजाना है। मसीह के आगमन के समय के बारे में यदि एक बात जिसे पवित्र शास्त्र स्पष्ट रूप से कहता है, तो वह यह है कि सिर्फ परमेश्वर जानता है कि यह कब पूरा होगा। दूसरा कोई और इसकी भविष्यवाणी नहीं कर सकता।

यह देखने के बाद कि अंत-समय के चिह्न इस दिव्य रहस्य को प्रगट नहीं करेंगे कि कब मसीह वापस लौटेगा, आइए उसके दूसरे आगमन के लिए कुछ महत्वपूर्ण पूर्व-सूचनाओं का पता लगाएं।

महत्वपूर्ण पूर्व-सूचनाएँ

चाहे भले ही हम नहीं जान सकते कि यीशु कब आएगा, फिर भी पवित्र शास्त्र कई परिस्थितियों का उल्लेख करता है जो उसकी वापसी के लिए पूर्व-सूचनाएँ हैं। सामान्यतः, ये पूर्व-सूचनाएँ पूर्ण नहीं हैं। जैसा कि हमने पहले वाले अध्याय में देखा, परमेश्वर की भविष्यवाणियाँ मौलिक रूप से सशर्त हैं। जिस तरह से कुम्हार मिट्टी को अलग-अलग बर्तन में ढाल सकता है, वैसे ही परमेश्वर के पास भी स्वतंत्रता है कि वह भविष्य के बारे में भविष्यवाणियों को कैसे पूरा करता है। फिर भी, वे परिस्थितियाँ जो पहले होंगी, पवित्र शास्त्र कहता है कि वे हमारा मार्गदर्शन भी करेंगी। वे इस बारे में वैध अपेक्षाओं को बनाते हैं कि भविष्य कैसे प्रगट होगा। और जब हम मसीह के आगमन के लिए तैयारी करते हैं तो वे हमें चेतावनी देते एवं प्रोत्साहित करते हैं।

परमेश्वर के राज्य के लिए शैतानी विरोध के साथ शुरू करते हुए, हम मसीह की वापसी के सबसे प्रमुख पूर्व-सूचनाओं में से सिर्फ तीन का उल्लेख करेंगे।

शैतानी विरोध

पवित्र शास्त्र सिखाता है कि शैतान और उसकी शैतानी सेना ने पूरे इतिहास में परमेश्वर के राज्य के प्रसार का विरोध किया है। इसलिए, शैतानी विरोध कोई नई बात नहीं है। लेकिन पवित्र शास्त्र यह भी सिखाता है कि शैतानी विरोध की एक विशेष रूप से भयानक समयावधि यीशु की वापसी से पहले होगी। प्रकाशितवाक्य 7:14 इसे "महा क्लेश" कहता है — वह समय जब दुष्ट आत्माएँ झूठे नबियों को भरमाने वाले चिह्नों एवं चमत्कारों को करने के लिए सशक्त करेंगी। और इसी तरह के विचार पूरे प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना के दर्शनों में दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 16:13-14 में, यूहन्ना ने लिखा:

> मैं ने ... तीन अशुद्ध आत्माओं को मेंढ़कों के रूप में निकलते देखा ... ये चिह्न दिखाने वाली दुष्टात्माएँ हैं (प्रकाशितवाक्य 16:13-14)।

संसार के अंत के आसपास होने वाली घटनाओं के साथ इसे जोड़कर, यीशु ने महा-क्लेश के बारे में मत्ती 24:21 भी में बात की। और, यूहन्ना के समान, उसने कहा कि झूठे चिह्न और चमत्कार इसकी विशेषता होगी। जैसा कि यीशु ने मरकुस 24:24 में कहा:

> झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिह्न, और अद्‌भुत काम दिखाएँगे — कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। (मत्ती 24:24)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

स्पष्ट रूप से, परमेश्वर के विरोध में शैतानी ताकतें हर उस चाल और शक्ति का उपयोग उसके राज्य के लिए उसकी योजनाओं में बाधा डालने के लिए करेंगे, जो उनके पास है।

मसीह की वापसी के लिए दूसरी पूर्व-सूचना परमेश्वर के राज्य के लिए मानव विरोध है।

मानव विरोध

पवित्र शास्त्र बताता है कि परमेश्वर के शैतानी विरोध के साथ कई मनुष्य सहयोग करेंगे। उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 13 इंगित करता है कि शैतान दो पशुओं का इस्तेमाल करेगा: एक भूमि से और एक समुद्र से। यह इंगित नहीं करता है कि ये पशु व्यक्तियों, लोगों के समूहों, या संस्थानों का प्रतिनिधित्व करते हैं या नहीं। लेकिन वे मानव प्रतीत होते हैं। एक बात जरूर है, वे मानवता को उस तरीके से प्रभावित करते हैं जिसका तात्पर्य समाजों और सरकारों पर नियंत्रण है। दूसरी बात, भूमि से निकलने वाले पशु की पहचान उससे की गई है जिसे प्रकाशितवाक्य 13:18 "मनुष्य का अंक," या "मानवता का अंक," या शायद, "व्यक्ति का अंक" कहता है। इन पशुओं के रूप में व्यक्तियों के अलावा, प्रकाशितवाक्य 16:13, 19:20 और 20:10 में एक शक्तिशाली "झूठे भविष्यद्वक्ता" का उल्लेख है।

परमेश्वर के राज्य के लिए मानव विरोध 2 थिस्सलुनीकियों 2:1-10 में भी दिखाई देता है, जो विद्रोह और "पाप के पुरुष" का उल्लेख करता है। पाप के पुरुष को झूठे चमत्कार करने के लिए शैतान द्वारा शक्ति दी जाएगी, और वह अंततः स्वयं को परमेश्वर घोषित करेगा। और कम उल्लेखनीय विरोध भी मौजूद रहेगा, जैसे कि झूठे भविष्यद्वक्ता और झूठे मसीह जिनका उल्लेख मत्ती 24:24 में है, और 1 यूहन्ना 2:18 में बताए गए कई मसीह विरोधी।

> जब हम नए नियम में शैतानी कार्य के बारे में या 1 यूहन्ना में मसीह विरोधी के बारे में, या प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पशु के बारे में पढ़ते हैं, तो हम जानते हैं कि ये सभी दुष्ट चरित्र, ये सभी दुष्ट देवता, यदि आप मान सकेंगे, तो वे सिर्फ वही कर सकते हैं जो परमेश्वर उन्हें करने की अनुमति देता है। और इसके परिणामस्वरूप, यह लगभग अय्यूब की पुस्तक के समान है; शैतान आता है और जो वह कर सकता है उसकी अनुमति यहोवा से माँगता है, और इस तरह, यह ऐसा नहीं है कि परमेश्वर और शैतान इस द्वैतवादतमक लड़ाई में हैं और हम निश्चित नहीं हैं कि कौन जीतेगा। यह ऐसा है कि परमेश्वर अपनी योजना पर काम कर रहा है, और यहाँ तक कि दुष्ट जन भी उन संस्थाओं में से एक है जिसका उपयोग वह यह सुनिश्चित करने के लिए करता है कि उसकी योजना पूरी हो जाए। इसलिए, *कुछ भी नहीं* — चाहे वह पशु क्यों न हो या मसीह विरोधी या स्वयं दुष्ट शैतान ही क्यों न हो — कोई भी परमेश्वर की योजना को रोक नहीं सकता है। और वास्तव में, उन सभी संस्थानों का उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि परमेश्वर की योजना उस तरीके से आगे बढ़े जैसे उसे बढ़ना चाहिए।
>
> — डॉ. सैमुएल लैमनरसन

दूसरे आगमन के लिए तीसरी पूर्व-सूचना है सफल विश्वव्यापी सुसमाचार प्रचार।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विश्वव्यापी सुसमाचार प्रचार

मत्ती 24:14 में, यीशु ने यह भविष्यवाणी की थी:

> राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अंत आ जाएगा (मत्ती 24:14)।

परमेश्वर का राज्य जिस गंभीर विरोध के विभिन्न प्रकारों का सामना करता है उसके बावजूद, राज्य अपने सुसमाचार संदेश को सफलतापूर्वक राष्ट्रों में प्रचार करेगा।

यीशु ने इस भविष्यवाणी के बाद कम से कम दो बार इस विचार को दोहराया। महान आदेश में, जिसे उसने अपने पुनरुत्थान के बाद जारी किया, उसने ग्यारह विश्वासपात्र शिष्यों को राष्ट्रों को सुसमाचार प्रचार करने और जो इसे ग्रहण करते हैं उन्हें प्रशिक्षण देने के लिए कहा। और उसने सुसमाचार प्रचार और प्रशिक्षण के इस कार्य को युग के अंत तक राज्य की संपूर्ण निरंतरता के साथ जोड़ा। मत्ती 28:19-20 में उसके वचनों को सुनिए:

> इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, ... और देखो मैं जगत के अंत तक सदा तुम्हारे संग हूँ (मत्ती 28:19-20)।

युग के अंत के लिए यीशु का संदर्भ सुझाव देता है कि वह जानता था कि ग्यारह इस काम को पूरा नहीं करेंगे, और यह कि कलीसिया को इसे जारी रखना होगा।

यीशु ने अपने स्वर्गारोहण से ठीक पहले अंतिम क्षणों में इसी तरह की बात की। प्रेरितों के काम 1:8 में, उसने अपने विश्वासपात्र प्रेरितों को बताया कि पृथ्वी की छोर तक सुसमाचार पहुँचाने के लिए वे पवित्र आत्मा की सामर्थ्य का उपयोग करेंगे। और पवित्र शास्त्र संकेत देता है कि यह विश्वव्यापी सुसमाचार प्रचार कई लोगों का मन फिराव हासिल करेगा। परिणामस्वरूप, यीशु के वापस लौटने तक, कलीसिया में हर जाति, भाषा, लोग और राष्ट्रों के सदस्य शामिल होंगे। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यूहन्ना के स्वर्गीय दर्शनों सहित, हम इसे कई स्थानों में देख सकते हैं। सिर्फ एक उदाहरण के रूप में, यहाँ प्रकाशितवाक्य 7:9 में यूहन्ना की रिपोर्ट है:

> और देखो, हर एक जाति और कुल और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था, श्वेत वस्त्र पहिने और अपने हाथों में खजूर की डालियाँ लिए हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है (प्रकाशितवाक्य 7:9)।

श्वेत वस्त्र और भीड़ द्वारा खजूर की डालियाँ लिए रहना उन लोगों को इंगित करता है जो परमेश्वर के प्रति वफादार थे। इस तरह, इस दर्शन में, यूहन्ना संसार के प्रत्येक भाग से छुड़ाए गए लोगों को देख रहा था। यह हमें बताता है कि मसीहा वाला राज्य अपने विरोध के माध्यम से आगे बढ़ेगा और सुसमाचार घोषित करने और मन फिराव वाले लोगों को हासिल करने में सफल रहेगा।

अंत-समय के चिह्नों पर अभी तक हमारी चर्चा ने इस तथ्य को देखा कि मसीह की वापसी का समय एक दिव्य रहस्य है, और मसीह की वापसी के लिए कई पूर्व-सूचनाएँ हैं। अब हम इन पूर्व-सूचनाओं को समझाने के लिए कुछ व्याख्यात्मक रणनीतियों को संबोधित करने की स्थिति में हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

व्याख्यात्मक रणनीतियां

सभी सुसमाचारीय लोग सहमत हैं कि कलीसिया को हमेशा विरोध का सामना करना पड़ा है, और यह भविष्य में भी विरोध का सामना करना जारी रखेगा। हम सभी सहमत हैं कि भूतकाल में सुसमाचार प्रचार सफल रहा है, और हम यीशु के वापस आने तक सुसमाचार प्रचार करना जारी रखने के लिए दृढ़ हैं। इसके अतिरिक्त, हम सब विश्वव्यापी मिशन के महत्व को समझते हैं, और आनंद करते हैं कि कलीसिया अस्तित्व में है, दृढ़ता से बढ़ रही है, और संसार भर में पनप रही है। लेकिन इन सब सहमतियों के बावजूद, हम कभी-कभी मसीह की वापसी की पूर्व-सूचनाओं की व्याख्या अलग-अलग तरीकों से करते हैं।

सामानयतः, सुसमाचारीय व्याख्यात्मक रणनीतियाँ चार प्रमुख प्रवृतियों को प्रदर्शित करती हैं।I इन प्रवृतियों को पहचानना मददगार है ताकि हम उनसे सीख सकें और पवित्र शास्त्र के बारे में अपनी समझ को सुधार सकें।

कुछ व्याख्यात्मक रणनीतियाँ इस बात पर ध्यान-केंद्रित करती हैं कि इतिहास में मसीह की वापसी के लिए पूर्व-सूचनाएँ कब दिखाई देंगी। ये रणनितियाँ अतीतवाद और भविष्यवाद के बीच होते हैं। एक चरम छोर पर, अतीतवाद कहता है कि ये पूर्व-सूचनाएँ हमारे अतीत में प्रगट हुए और भविष्य में ये दोहराए नहीं जाएंगे। उदाहरण के लिए, एक अतीतवादी कह सकता है कि मसीह विरोधी एक मनुष्य था जो पहली सदी के दौरान रहता था, और हमें भविष्य में उसके समान किसी की तलाश नहीं करनी चाहिए।

दूसरे चरम छोर पर, भविष्यवादी कहता है कि मसीह की वापसी के लिए पूर्व-सूचनाएँ अभी तक प्रगट नहीं हुए हैं, लेकिन वे भविष्य में प्रगट होंगे। उदाहरण के लिए, एक भविष्यवादी के कहने की संभावना है कि मसीह विरोधी दूसरे आगमन से पहले अंतिम पीढ़ी में रहेगा। और इन दो चरम छोरों के बीच लोगों और घटनाओं के समय से संबंधित विचारों का एक विस्तृत क्षेत्र है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग कह सकते हैं कि मसीह विरोधी एक पुरुष या मानवीय संस्था का *प्रकार* है जो पूरे इतिहास में रहा है और दोहराया जाता है।

अन्य व्याख्यात्मक रणनीतियाँ इस बात पर ध्यान-केंद्रित करती हैं कि इतिहास में मसीह की वापसी के लिए पूर्व-सूचनाएँ कैसे प्रकट होंगे। ये रणनितियाँ इतिहासवाद और आदर्शवाद के बीच होते हैं। इतिहासवाद इन पूर्व-सूचनाओं को पूरे इतिहास में वास्तविक लोगों और घटनाओं से जोड़ता है। उदाहरण के लिए, 16वी शताब्दी में रिफॉर्मेशन के दौरान, कई इतिहासवादी मानते थे कि रोमन कैथोलिक पोप, या स्वयं पोपतंत्र मसीह विरोधी था।

इसके विपरीत, आदर्शवाद मसीह की वापसी की पूर्व-सूचनाओं को अमूर्त अवधारणाओं और सामान्य सिद्धांतो से जोड़ता है। उदाहरण के लिए, एक आदर्शवादी तर्क दे सकता है कि मसीह विरोधी वह है जो झूठ का प्रचार करता है और यीशु का विरोध करता है। और इन दो चरम छोरों के बीच दृष्टिकोणों की एक विस्तृत विभिन्नता है जो मसीह की वापसी की पूर्व-सूचनाओं की व्याख्या इतिहासवाद और आदर्शवाद के भिन्न-भिन्न मात्रा में करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोग कह सकते हैं कि पूरे इतिहास में कई मसीह विरोधी रहे हैं, लेकिन इस बात पर जोर नहीं देते कि वे पोपतंत्र जैसी संस्था से जुड़े हों।

ये चार प्रवृतियाँ कई तरह से अति-व्यापन करते हैं। और उस अनुच्छेद के आधार पर जिसकी वे व्याख्या कर रहे है, एक व्याख्याकार अक्सर अलग-अलग रणनितियों का उपयोग करता है। एक व्यक्ति किसी अनुच्छेद में अतीतवाद की ओर जा सकता है, और दूसरे में भविष्यवाद की ओर, या कुछ अनुच्छेदों में इतिहासवाद की ओर और अन्यों में आदर्शवाद की ओर। कभी-कभी व्याख्याकार एक ही अनुच्छेद *के भीतर* विभिन्न रणनितियों का भी उपयोग करेगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इनमें से प्रत्येक व्याख्यात्मक रणनीतियों में ताकत एवं कमजोरियां हैं, और सुसमाचारीय लोग इन सभी रणनीतियों का उपयोग अलग-अलग मात्रा में करते हैं। इसलिए, उन्हें ऐसी प्रणाली के रूप में सोचने के बजाय जो हमारी निष्ठा की माँग करते हैं, संभवतः उन्हें उपकरण के रूप में सोचना बेहतर है जो पवित्र शास्त्र के विभिन्न पहलुओं को समझने में हमारी मदद करते हैं। और जब किसी विशेष अनुच्छेद की व्याख्या करने की बात आती है, तो हमें संदर्भ को निर्देश देने देना चाहिए कि हम किस उपकरण या उपकरणों का उपयोग करें।

अब जबकि हमने मसीह की वापसी पर बाइबल की शिक्षा को सारांशित कर लिया है, और अंत-समय के चिह्नों का सर्वेक्षण कर लिया है, तो आइए अपने ध्यान को अपने तीसरे प्रमुख विषय की ओर मोड़ें: सहस्राब्दी।

सहस्राब्दी

"सहस्राब्दी" शब्द शाब्दिक रूप से एक हज़ार वर्षों की अवधि को बताता है। लेकिन जब हम सहस्राब्दी की बात करते हैं, तो हमारे ध्यान में प्रकाशितवाक्य 20:2-7 में उल्लिखित मसीह के राज्य की युगांतरकारी अवधि है। यह पवित्र शास्त्र में एकमात्र स्थान है जहाँ इस अवधि को एक हज़ार वर्ष लंबा बताया जाता है। लेकिन कई व्याख्याकार मानते हैं कि सहस्राब्दी को अन्य अनुच्छेदों में भी बताया गया है — विशेषकर पुराने नियम में इस्राएल के लिए समृद्धि की एक लंबी अवधि की भविष्यवाणियों में।

युगांत-विद्या की समय-रेखा के संबंध मे, सभी सुसमाचारीय लोग विश्वास करते हैं कि मसीह अभी स्वर्ग से राज्य कर रहा है। और हम सब विश्वास करते हैं कि यीशु को पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के परिपूर्ण होने से पहले वापस लौटना है। इस मायने में, हम सब उद्घाटित युगांत-विद्या के किसी न किसी रूप को मानते हैं।

जैसा कि हमने पहले वाले अध्याय में उल्लेख किया, उद्घाटित युगांत-विद्या ऐसा विचार है कि परमेश्वर का युगांतरकारी राज्य शुरू हो चुका है या मसीह में "उद्घाटित हुआ" है, लेकिन यह अभी तक परिपूर्णता में नहीं आया है। लेकिन परमेश्वर के राज्य के उद्घाटित स्वभाव के बारे में सामान्य सहमति के बावजूद, हम इस बात पर असहमत होते हैं कि युगांतरकारी समय-रेखा में सहस्राब्दी को कहाँ रखें। वास्तव में, इस प्रकार की असहमति ने कलीसिया को शुरूआती शताब्दियों से चित्रित किया है।

उदाहरण के लिए, जस्टिन मार्टियर, जो कि लगभग सन् 100 से 165 तक रहे थे, उन्होंने अपने *डायलॉग विद ट्रायफो,* के अध्याय 80 में निम्न बात को लिखा:

> मैं और अन्य लोग ... आश्वस्त हैं कि मृतकों का पुनरुत्थान, और यरूशलेम में हज़ार वर्ष होंगे, जो कि फिर बनाया, सुसज्जित, एवं विस्तारित किया जाएगा।

यहाँ, जस्टिन ने इस दृष्टिकोण का बचाव किया कि यीशु सहस्राब्दी से पहले वापस लौटेगा। लेकिन इसी अध्याय में अन्य स्थान पर, उसने यह लिखा:

> मैं और अन्य लोग इस विचार के हैं ... लेकिन ... कई जो शुद्ध और पवित्र विश्वास वाले हैं, और सच्चे मसीही हैं, अन्यथा सोचते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

ऐसा लगता है सहस्राब्दी की समयावधि और विवरणों के बारे में हमेशा अलग-अलग विचार रहे हैं।

सहस्राब्दी से संबंधित विचार के इतने सारे समूह हैं, और इन समूहों के भीतर भी कई सारी भिन्नताएँ हैं, कि सम्भवतः इस अध्याय में हम उनके सभी विवरणों को शामिल नहीं कर सकते हैं। इसलिए, हमारा लक्ष्य सिर्फ चार प्रमुख प्रणालियों का परिचय देना, और उनमें से प्रत्येक का एक संक्षिप्त विवरण प्रदान करना होगा। लेकिन हम यह भी जोर देना चाहते हैं कि इनमें से प्रत्येक प्रणाली को बाइबल पर विश्वास करने वाले, सुसमाचारीय मसीही लोगों द्वारा माना जाता है। इसलिए, चाहे हम किसी भी प्रणाली को अधिक तर्कपूर्ण समझें, हमें उन लोगों का सम्मान करना चाहिए जो अन्य प्रणालियों का मानते हैं, और जब हम उनसे असहमत होते हैं तो प्रेम एवं विनम्रता के साथ उनसे व्यवहार करना चाहिए।

इस अध्याय में, हम वर्तमान में मिलने वाले सहस्राब्दी के चार प्रमुख दृष्टिकोणों का संक्षेप में वर्णन करेंगे: ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद, युगों-वाला पूर्व-सहस्राब्दवाद, उत्तर-सहस्राब्दवाद, और अ-सहस्राब्दवाद। आइए पहले ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद को देखें।

ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद

ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद दो पूर्व-सहस्राब्द वाली प्रणालियों में से एक है जिसकी हम जाँच करेंगे। पुराने लेखनों में, इसे अक्सर "*किलास्म*" कहा जाता है, जो कि युनानी शब्द "*किलीओई*" से है, जिसका अर्थ "हज़ार" है।

"पूर्व-सहस्राब्दवाद" शब्द स्वयं इस विश्वास को संदर्भित करता है कि यीशु सहस्राब्दी शुरू होने से पहले वापस आएगा। और "ऐतिहासिक" शब्द बताता है कि यह दृष्टिकोण, ज्यादा आधुनिक युगों-वाले पूर्व-सहस्राब्दवाद के विपरीत पूरे कलीसियाई इतिहास के दौरान माना गया है।

ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद सिखाता है कि यीशु के लौटने से ठीक पहले कलीसिया महा-क्लेश से गुजरेगी। जब यीशु वापस आता है, तो वह उन विश्वासियों को इकट्ठा करेगा जो उस समय जीवित होंगे, इस संसार को प्रभावित करने से रोकने के लिए शैतान को बाँधेगा, और अपने शारीरिक, पृथ्वी वाले सहस्राब्दी के शासन को शुरू करेगा। और — यह अंत वाली बात महत्वपूर्ण है — पूर्व-सहस्राब्दवाद की मुख्य विशेषताओं में एक यह है कि यह यीशु को सहस्राब्दी के दौरान शारीरिक रूप में पृथ्वी पर राज्य करता हुआ देखता है।

कुछ पूर्व-सहस्राब्दी वाले व्याख्याकार मानते हैं कि सहस्राब्दी ठीक एक हज़ार वर्ष लम्बा होगा, लेकिन अधिकांश सोचते हैं कि "एक हज़ार" आलंकारिक रीति से समय के एक लंबे अनिश्चित काल को दिखा सकता है। इसी तरह, ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद विश्वासियों के "जमा होने" या "उठा लिए जाने" के विवरणों पर पूरी तरह से एक नहीं है। इसलिए, हमें इसे और सावधानी से समझाने के लिए रुकना चाहिए। 1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17 में, पौलुस ने ऊपर उठाये जाने का इस प्रकार वर्णन किया:

> क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा, उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उसके साथ बादलों में उठा लिए जाएंगे कि हव्वा में प्रभु से मिलें। और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17)।

"रैपचर" शब्द इन पदों के लातीनी संस्करण से आता है, जो "*रेपियो*" क्रिया का उपयोग करता है, और अंग्रेजी में "उठा लिया जाना" है। इस तरह, "रैपचर" एक घटना है जिसमें विश्वासियों को मसीह के पास बादलों में उठाया या इकट्ठा किया जाएगा।

ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद सिखाता है कि जब मसीह वापस आता है तो जो विश्वासी लोग जीवित बचे रहेंगे वे हव्वा में उसके पास उठा लिए जाएंगे। फिर वे तुरंत उसके विजयी सैन्य परेड के हिस्से के रूप में उसके साथ पृथ्वी पर लौट आएंगे, और उसके सहस्राब्दी वाले शासनकाल के दौरान पृथ्वी पर रहेंगे। हालांकि, कुछ ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद सोचते हैं कि रैपचर में पुनर्जीवित विश्वासियों को भी शामिल किया जाएगा। लेकिन अन्य लोगों का तर्क है कि सहस्राब्दी के अंत में अंतिम न्याय के होने तक विश्वासियों का पुनरुत्थान नहीं होगा।

किसी भी स्थिति में, सहस्राब्दी के दौरान, विश्वासी एवं अविश्वासी लोग समान रूप से पृथ्वी की आशीषों, शांति, और समृद्धि का आनंद उठाएंगे। यह सहस्राब्दी नए आकाश और नई पृथ्वी की अंतिम अवस्था नहीं होगी; हालांकि, कुछ ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद वाले मानते हैं कि अंतिम अवस्था सहस्राब्दी के दौरान शुरू जाएगी। लेकिन वे सभी इस बात से सहमत हैं कि सहस्राब्दी हमारे वर्तमान युग से कहीं अधिक आशीषमय होगी। ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद के धर्मविज्ञानी अक्सर पुराने नियम के अनुच्छेदों में सहस्राब्दी की भविष्यवाणी को देखते हैं जो एक धन्य युग, लेकिन नश्वर जीवन का वर्णन करते हैं, जैसे कि भजन 72:8-14, यशायाह 11:2-9, और जकर्याह 14:5-21।

दोनों पूर्व-सहस्राब्दी प्रणालियों के विशिष्ट घटकों में से एक यह है कि अविश्वासियों को सहस्राब्दी के अंत तक पुनर्जीवित नहीं किया जाएगा। लेकिन, सहस्राब्दी के दौरान पृथ्वी पर फिर भी अविश्वासी लोग रह रहे होंगे, और वहाँ अभी भी पाप, भ्रष्टाचार और मौत होगी। माना जाता है कि यशायाह 65:20 इस समय का उल्लेख कर रहा है जब वह कहता है:

> उसमें फिर न तो थोड़े दिन का बच्चा, और न ऐसा बुढ़ा जाता रहेगा जिसने अपनी आयु पूरी न की हो; क्योंकि जो लड़कपन में मरनेवाला है वह सौ वर्ष का होकर मरेगा, परन्तु पापी सौ वर्ष का होकर श्रापित ठहरेगा। (यशायाह 65:20)।

पूर्व-सहस्राब्दवादी मानते हैं कि यशायाह ने एक ऐसे समय की भविष्यवाणी की थी जब लोग आज की तुलना में अधिक समय तक जीवित रहेंगे। और वे तर्क देते हैं कि यशायाह 11:10, 11 जैसे, पुराने नियम के अन्य अनुच्छेद सुझाव देते हैं कि इस समय पर भी पापी उद्धार पाने की कोशिश करेंगे। चूंकि ये विवरण वर्तमान अवस्था और अंतिम अवस्था से मेल नहीं खाते हैं, इसलिए इनकी व्याख्या सहस्राब्दी के लिए संदर्भ के रूप में की जाती है।

सहस्राब्दी के अंत में, ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवादी कहते हैं कि शैतान का विद्रोह होगा। इसके बाद उन सभी का पुनरुत्थान होगा जो पहले पुनर्जीवित नहीं किए गए थे। फिर अंतिम न्याय होगा। इस समय पर, नए आकाश और नई पृथ्वी पर परमेश्वर का अनंत राज्य पूरी तरह से आ जाएगा।

> मूल रूप से, मैं प्रकाशितवाक्य 20 के पूर्व-सहस्राब्दी वाली व्याख्या को मानता हूँ, क्योंकि इस अनुच्छेद को पढ़ने का यह सबसे सरल तरीका है ... मेरे अनुसार यह देखना स्वाभाविक है कि प्रकाशितवाक्य 19 के अंत में, पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता को आग की झील में डाल दिया गया है और फिर शैतान को नहीं – सर्प को आग की झील में नहीं फेंका जाता है, उसे हज़ार वर्ष के लिए बाँधा जाता है। और फिर हज़ार

> वर्षों से पहले विश्वासियों का पुनरुत्थान होता है और वे मसीह के साथ हज़ार वर्ष के लिए राज्य करते हैं। और फिर, हज़ार वर्षों के अंत में, शैतान को छोड़ा जाता है, और फिर उसे पकड़ा जाता है, और केवल तब उसे आग की झील में फेंका जाता है जहाँ पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता पहले ही से थे।
>
> — डॉ. जेम्स एम. हैमिल्टन

यह देखने के बाद कि ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद किस तरह से सहस्राब्दी को देखता है, आइए युगों-वाले पूर्व-सहस्राब्दवाद के विशेष विचारों पर एक नजर डालते हैं।

युगों-वाला पूर्व-सहस्राब्दवाद

एक पूर्व-सहस्राब्दवाद वाली प्रणाली के रूप में, युगों-वाला पूर्व-सहस्राब्दवाद मानता है कि मसीह वापस आएगा और विश्वासी लोग सहस्राब्दी से *पहले* जीवित किए जाएंगे। सहस्राब्दी के दौरान यीशु शारीरिक रूप में पृथ्वी पर राज्य करेगा। और सहस्राब्दी के बाद अविश्वासी लोग पुनर्जीवित किए और दंडित किए जाएंगे लेकिन ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद के विपरीत, युगों- वाला पूर्व-सहस्राब्दवाद सामान्यतः सिखाता है कि इससे पहले कि महा-क्लेश की शुरूआत हो, पुनर्जीवित किए गए और अभी भी जीवित विश्वासी लोग स्वर्ग में उठा लिए जाएंगे और वे वहाँ पर सहस्राब्दी के अंत तक रहेंगे।

ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद से भिन्नता का एक कारण युगों-वाले पूर्व-सहस्राब्दवाद के युगों वाले पहलू में है। युगवाद यह सिखाता है कि परमेश्वर अलग-अलग कालों या “युगों” के दौरान अलग-अलग तरीकों से काम करता है। और इन युगों का एक परिणाम यह है कि कलीसिया की तुलना में परमेश्वर के पास यहूदी लोगों के लिए अलग योजना है।

युगवाद के अनुसार, परमेश्वर ने पुराने नियम में इस्राएल के लिए अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिए यीशु को इस्राएल देश का मसीहा बनने के लिए भेजा। लेकिन जब इस्राएल ने अपने मसीहा के रूप में यीशु का तिरस्कार किया, तो परमेश्वर ने उनके लिए अपनी योजना को रोक दिया। उनके स्थान पर, परमेश्वर ने कलीसिया में अन्यजातियों को ऊँचा स्थान दिया। बेशक, कलीसिया में यहूदी विश्वासी भी हैं। लेकिन परमेश्वर अभी भी इस्राएल देश के लिए अपने उद्देश्यों को पूरा करने का अभिप्राय रखता है। इसे पूरा करने के लिए, परमेश्वर महा-क्लेश से पहले कलीसिया को उठा लेगा और सहस्राब्दी के दौरान मुख्यतः इस्राएल के साथ कार्य करेगा।

ज्यादातर युगों-वाले पूर्व-सहस्राब्दवादी विश्वास करते हैं कि रैपचर के बाद जो लोग पृथ्वी पर बच जाएंगे वे महा-क्लेश को सहेंगे, जो कि 7 वर्षों तक चलेगा। महा-क्लेश के बाद, यीशु लौटेगा, और सहस्राब्दी शुरू हो जाएगी। यीशु इस्राएल देश को पुनःस्थापित करेगा, और यरूशलेम में अपने सिंहासन से सभी राष्ट्रों के ऊपर दृश्यमान रूप से राज्य करेगा। इस समय के दौरान, इस्राएल देश के लिए दी गई पुराने नियम की अपनी प्रतिज्ञाओं को परमेश्वर पूरा करेगा। उदाहरण के लिए, आमोस 9:11-15 में परमेश्वर ने जो कहा उसे सुनिए:

> उस समय मैं दाऊद की गिरी हुई झोपड़ी को खड़ा करूँगा, और उसके बाड़े के नाकों को सुधारूँगा, और खण्डहरों को फिर बनाऊँगा, और जैसा वह प्राचीनकाल में था, उसको वैसा ही बना दूँगा, जिससे वे बचे हुए एदोमियों को वरन् सब जातियों को जो मेरी कहलाती हैं, अपने अधिकार में लें ... मैं अपनी प्रजा इस्राएल के बन्दियों को

> लौटा ले आऊँगा; और वे उजड़े हुए नगरों को सुधारकर उन में बसेंगे ... मैं उन्हें, उन्हीं की भूमि पर बोऊँगा, और वे अपनी भूमि में से जो मैं ने उन्हें दी है, फिर कभी उखाड़े न जाएँगे (आमोस 9:11-15)।

युगवादी लोग विश्वास करते हैं कि इस तरह की भविष्यवाणियाँ सहस्राब्दी में इस्राएल देश के लिए पूरी होंगी।

सहस्राब्दी के अंत मे, शैतान एक विद्रोह को उकसाएगा, लेकिन परमेश्वर, शैतान और उसकी सेना को पूरी तरह से पराजित करेगा। इसके बाद, परमेश्वर अविश्वासियों को, और साथ में उन विश्वासियों को पुनर्जीवित करेगा जो रैपचर के बाद विश्वास में आए और मर गए हैं। फिर अंतिम न्याय होगा, और नए आकाश और नई पृथ्वी में अंतिम अवस्था शुरू होगी।

> मैं एक प्रगतिशील युगवादी हूँ क्योंकि मैं सोचता हूँ यह दोनों में से सबसे अच्छी बात लेता है, वाचा वाले ईश्वरीय-ज्ञान से, जो कि पुराने नियम में परमेश्वर के एक लोग और वाचा की प्रतिज्ञाओं पर उस ध्यान को बनाए रखता है, और साथ में यह पुराने युगवादी दृष्टिकोण की सबसे अच्छी बात लेता है जो कि इस्राएल के लिए भविष्य के कार्यक्रम और योजना को देखता है। इस तरह, मुझे दोनों दृष्टिकोणों की सबसे अच्छी बात मिलती है।
>
> — डॉ. डैनी एकिन

अब जबकि हमने ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद और युगों-वाले पूर्व-सहस्राब्दवाद के परिप्रेक्ष्य से सहस्राब्दी को देख लिया है, आइए उत्तर-सहस्राब्दवाद का पता लगाएं।

उत्तर-सहस्राब्दवाद

"उत्तर-सहस्राब्दवाद" शब्द इस विश्वास को संदर्भित करता है कि सहस्राब्दी समाप्त होने के बाद यीशु वापस आएगा। यह दोनों पूर्व-सहस्राब्दवादों से स्पष्ट रूप से विपरीत है, जो कहते हैं कि वह सहस्राब्दी के शुरू होने से पहले वापस लौटेगा। पूर्व-सहस्राब्दी प्रणाली और उत्तर-सहस्राब्दवाद के बीच दूसरी महत्वपूर्ण भिन्नता है मसीह के सहस्राब्दी वाले राज्य के दौरान उसका स्थान। पूर्व-सहस्राब्दवाद मसीह को शारीरिक रूप में पृथ्वी पर देखता है। लेकिन जब वह आत्मिक रूप से पृथ्वी पर राज्य करता है तो उत्तर-सहस्राब्दवाद उसे शारीरिक रूप से स्वर्ग में देखता है।

उत्तर-सहस्राब्दी प्रणाली में, सहस्राब्दी सुसमाचार के लिए सफलता का एक युग है जो मसीह की वापसी के लिए पृथ्वी को तैयार करता है। कुछ विश्वास करते हैं कि सहस्राब्दी यीशु के स्वर्गारोहण से लेकर उसकी वापसी तक फैला है; अन्य सोचते हैं कि यह उसके वापस लौटने से पहले के अंतिम हज़ार वर्ष होंगे। लेकिन सभी उत्तर-सहस्राब्दवादी लोग मानते हैं कि सहस्राब्दी के दौरान इतिहास का सामान्य निदेशन पूरे संसार भर में सुसमाचार और कलीसिया के लिए अधिक से अधिक सफलता लेकर आएगा। मसीह का राज्य सुनिश्चित करेगा कि जातियाँ विश्वास में आएं। मसीही नैतिकता मानव समाज को चित्रित करेगी। और अंततः परमेश्वर का राज्य पूरे संसार में छा जाएगा। इस विचार का समर्थन करने के लिए, उत्तर-सहस्राब्दवादी लोगों ने उन पवित्र शास्त्र के पदों की ओर इशारा किया जो मसीह के शत्रुओं पर उसकी की अंतिम निर्णायक जीत को

सुनिश्चित करते हैं, और इनकी व्याख्या सहस्राब्दी के दौरान उसके राज्य के संदर्भ के रूप में करते हैं। उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों 15:25 में पौलुस के वचनों को सुनिए:

> जब तक वह अपने बैरियों को अपने पाँवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है (1 कुरिन्थियों 15:25)।

उत्तर-सहस्राब्दवादी सामान्यतः विश्वास करते हैं कि इस तरह के पद सिखाते हैं कि इससे पहले कि मसीह वापस लौटता है वह अपने शत्रुओं को सफलतापूर्वक पराजित करेगा।

उत्तर-सहस्राब्दवाद सहस्राब्दी को परमेश्वर के राज्य के लिए बढ़ती हुई जीत के समय के रूप में देखते हैं। इसलिए, महा-क्लेश के संबंध में यह कभी-कभी अतीतवादी दृष्टिकोण को यह विश्वास करते हुए अपनाता है, कि यह ईसा के बाद पहली सदी में हो चुका है। फिर भी, लगभग सभी उत्तर-सहस्राब्दवादी लोग सहस्राब्दी के अंत में शैतान के विद्रोह, और जब मसीह लौटता है तो शैतान की पराजय को स्वीकार करते हैं।

ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद के कुछ प्रकारों के समान, उत्तर-सहस्राब्दवाद सिखाता है कि रैपचर में पुनर्जीवित और उस समय जीवित विश्वासी लोग शामिल होंगे। ये लोग प्रभु से जब वह आता है तो आकाश में मिलेंगे, और तुरंत उसके विजयी सैन्य परेड के हिस्से के रूप में उसके साथ पृथ्वी पर वापस लौटेंगे। अविश्वासियों को भी इस समय पुनर्जीवित किया जाएगा, और विश्वासियों एवं अविश्वासियों दोनों पर यीशु अपने अंतिम न्याय को सुनाएगा। अंत में, वह नए आकाश और नई पृथ्वी को लाएगा, और अंतिम अवस्था शुरू हो जाएगी।

> मैं सोचता हूँ कि उत्तर-सहस्राब्दवाद दृष्टिकोण की पुष्टि करने के लिए सबसे अधिक विवश करने वाले बाइबल के कारणों में से एक है, कि जब आप संपूर्णता में छुटकारे के इतिहास को देखते हैं ... अलग-अलग समयों में, उत्तर-सहस्राब्दवादी लोगों ने एक निश्चित हज़ार वर्ष के सुनहरे युग में विश्वास किया है ... लेकिन आज कई कहते हैं कि वे उत्तर-सहस्राब्दी हैं जो किसी भी तरह के सुनहरे युग में विश्वास नहीं करते हैं। वे जो वास्तव में कहना चाहते हैं वह है सुसमाचार की वास्तविकताओं के लिए एक सकारात्मक दृष्टिकोण, यह है आगे जाना और कि जातियाँ अंततः मसीह के आने से पहले आएंगे, और कि यह सफल होगा ... और जब हम प्रकाशितवाक्य में देखते हैं, तो हम देखते हैं, जब वे भीड़ की ओर देख रहे हैं, पूरी पृथ्वी को, नए आकाश और नई पृथ्वी में, वह हर एक जाति, भाषा, और देश से परमेश्वर के स्वरूपों से भरी हुई है। और मैं सोचता हूँ कि पूरे पवित्र शास्त्र के लिए यहाँ एक प्रगतिशील प्रवाह है, इस वास्तविकता की ओर इशारा करते हुए कि पूरी पृथ्वी को उसके स्वरूपों से भरने के लिए अंततः परमेश्वर की शुरूआती योजना, आदम और हव्वा के लिए उसकी शुरूआती बुलाहट, सच हो जाएगी। और यह कि पूरी पृथ्वी के ऊपर परमेश्वर के सच्चे लोग होंगे जो छुड़ाए गए हैं और मसीह के स्वरूप में नए बनाए गए हैं।
>
> — प्रोफे. ब्रैंडन पी. रॉबिन्स

ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद, युगों-वाले पूर्व-सहस्राब्दवाद और उत्तर-सहस्राब्दवाद का सर्वेक्षण करने के बाद, हम चौथे प्रमुख युगांतरकारी प्रणाली को संबोधित करने के लिए तैयार हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अ-सहस्राब्दवाद

"अ-सहस्राब्दवाद" शब्द का शाब्दिक अर्थ है "कोई सहस्राब्दी नहीं।" इसका नाम इस विश्वास को संदर्भित करता है कि सहस्राब्दी सचमुच में एक हज़ार वर्ष लंबा नहीं होगा। दूसरी प्रणालियाँ भी अनुमति देती हैं कि "एक हज़ार वर्ष" वाला वाक्यांश आलंकारिक हो सकता है। लेकिन अ-सहस्राब्दवाद के सभी रूप आलंकारिक समझ पर जोर देते हैं।

उत्तर-सहस्राब्दवाद के कुछ रूपों के समान, अ-सहस्राब्दवाद भी सहस्राब्दी को मसीह के स्वर्गारोहण और वापसी की बीच की संपूर्ण समयावधि को मानते हैं। इस समय के दौरान, यीशु स्वर्ग में अपने सिंहासन से पृथ्वी पर राज्य करता है। और उत्तर-सहस्राब्दवाद के सभी रूपों के समान, अ-सहस्राब्दवाद विश्वास करता है कि यीशु सहस्राब्दी के बाद वापस आएगा।

अ-सहस्राब्दवाद को उत्तर-सहस्राब्दवाद से जो बात अलग करती है वह है कि अ-सहस्राब्दवाद इस बात पर जोर नहीं देता कि यीशु का सहस्राब्दी वाला राज्य लगातार फैलेगा और संसार को सुधारेगा। अ-सहस्राब्दवाद के दृष्टिकोण से, कलीसिया का अनुभव, सफलता और बढ़ोत्तरी स्वयं कलीसिया के कार्यों और परमेश्वर के देखरेख वाले मुफ्त कार्यों के द्वारा बहुत हद तक निर्धारित होगी। इस तरह, यह संभव है कि संसार परमेश्वर के प्रति अधिक से अधिक वफादार बनना जारी रखे, लेकिन यह भी संभव है कि ऐसा न हो। महा-क्लेश के संबंध में, कुछ अ-सहस्राब्दवादी लोग विश्वास करते हैं कि यह कलीसियाई इतिहास के शुरू में हो चुका है, और अन्य लोग इसे सहस्राब्दी के अंत में शैतान के विद्रोह के साथ जोड़ते हैं।

इस बिंदु से आगे अ-सहस्राब्दवाद और उत्तर-सहस्राब्दवाद में कोई अंतर नहीं है। जब यीशु वापस आएगा तो वह शैतान के विद्रोह को कुचल देगा। वह पुनर्जीवित किए गए और उस समय पर जीवित विश्वासियों को उठा लेगा, और तुरंत उनके साथ पृथ्वी पर लौटेगा। अविश्वासियो को पुनर्जीवित किया जाएगा, और यीशु अपना अंतिम न्याय सब लोगों के लिए सुनाएगा। और अंततः, यीशु नए आकाश और नई पृथ्वी को लाएगा, और फिर अंतिम अवस्था शुरू हो जाएगी।

> युगांत-विद्या के लिए कई वैध सुसमाचारीय व्याख्याएं हैं, और मेरा दृष्टिकोण अ-सहस्राब्दी वाला है ... मुझे कुछ ऐसा लगता है कि जब आप विशेष रूप से पौलुस की युगांत-विद्या को देख रहे होते हैं — और बेशक, गीरहार्डस वॉस ने पौलुस की युगांत-विद्या की शानदार चर्चा को लिखा — तो आप पौलुस की युगांत-विद्या में एक सरलता को देखेंगे कि यीशु मसीह वापस आता है और अंत होता है, और सब बातें उस पल में पूरी होती हैं, और हमें नए आकाश और नई पृथ्वी में बुलाया जाता है, और यह सुंदर सरल लगता है। और महान सुंदरता सरल है। और मुझे ऐसा लगता है कि बाइबल वाली युगांत-विद्या सरल है।
>
> — डॉ. सैन्डर्स एल. विलसन

हम चाहे किसी भी दृष्टिकोण को अपनाते हैं — ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद, युगों-वाला पूर्व-सहस्राब्दवाद, उत्तर-सहस्राब्दवाद या अ-सहस्राब्दवाद, — यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि इनमें से प्रत्येक दृष्टिकोण सुसमाचारीय मसीहों द्वारा माना जाता है। और जब हम सहस्राब्दी की समयरेखा को पढ़ते हैं तो हमें नम्र, उदार और सिखनेयोग्य बनने के लिए इसके द्वारा प्रेरित किया जाना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> ध्यान देने योग्य सबसे महत्वपूर्ण बातों में से एक यह है कि सहस्राब्दी के सभी सुसमाचारीय रूप — "*उत्तर,*" "*अ-,*" या "*पूर्व*" — मसीह के दूसरे आगमन, मृतकों के पुनरुत्थान, अंतिम न्याय, और स्वर्ग एवं नरक पर विश्वास करते हैं। पिछले 20 से 25 या कुछ वर्षों में कुछ बुनियादी विचारों में बढ़ती हुई सहमति जैसी नजर आती है, विशेषकर जिसे अक्सर "पहले ही से और अभी तक नहीं" वाले विचारों के रूप में वर्णित किया जाता है। जॉर्ज एल्डन लैड, जो एक ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवादी थे, इस उद्घाटित युगांत-विद्या वाले विचार "पहले से ही और अभी तक नहीं," के इस विचार को बढ़ावा देने में बहुत प्रमुख थे। लेकिन हम मसीह के पहले आगमन को जो कि अंतिम दिनों का उद्घाटन करते हैं इस समझ को अ-सहस्राब्दवाद और उत्तर-सहस्राब्दवाद लोगों के बीच भी देखते हैं ... "पहले ही से, अभी तक नहीं" के इस बड़े विचार पर एक बढ़ती हुई सहमति प्रतीत होती है। और मैं इसे उत्साहजनक पाता हूँ, कि सहमतियों में मतभेदों के बावजूद, जब हम पवित्र शास्त्र को पढ़ना जारी रखते हैं, तो हम कुछ समस्याओं को दूर कर रहे हैं जो कि अतीत में, इनमें से प्रत्येक दृष्टिकोण में थे, और अधिक से अधिक सहमतियों पर आ रहे हैं।
>
> — डॉ. कीथ मैथीसन

उपसंहार

"राजा के आगमन" पर इस अध्याय में, हमने अनिवार्यता और तरीके के संदर्भ में मसीह के वापस लौटने पर विचार किया है; हमने दिव्य रहस्य के संबंध में अंत-समय के चिह्नों, मसीह की वापसी के पूर्व-संकेतों और व्याख्यात्मक रणनियतियों का पता लगाया है; और हमने ऐतिहासिक पूर्व-सहस्राब्दवाद, युगों-वाले पूर्व-सहस्राब्दवाद, उत्तर-सहस्राब्दवाद, और अ-सहस्राब्दवाद के परिप्रेक्ष्य में सहस्राब्दी पर चर्चा की है।

कलीसिया के इतिहास में कई समयों पर, युगांत-विद्या पर मतभेदों ने संघर्ष और विभाजन को जन्म दिया है। और यह आज भी उतना ही सच है जितना कि यह कभी था। लेकिन जब हम इस अध्याय में उल्लिखित उन प्रमुख सुसमाचारीय युगांत-विद्याओं की बात करते हैं, तो हमें विभाजन का विरोध करना चाहिए। आखिरकार, हर एक सुसमाचारीय व्यक्ति स्वीकार करता है कि यीशु मृतकों में से जी उठा और स्वर्ग पर चढ़ गया। हम सभी सहमत हैं कि वह वर्तमान में स्वर्ग से राज्य करता है। हम सभी विश्वास करते हैं कि पृथ्वी पर परमेश्वर के राज को जारी रखने के लिए वह शारीरिक और दृश्यमान रूप में वापस लौटेगा, और उसके माध्यम से परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाएँ पूरी होंगी। और हम सब इस तथ्य पर अपनी आशा को रखते हैं कि सहस्राब्दी के बाद, वह नए आकाश और नई पृथ्वी की अंतिम अवस्था को लाएगा। तो हमारी असहमतियां उन बातों की तुलना में फीकी पड़ जाती हैं जिन पर हम परस्पर एक जैसा विश्वास करते हैं। और इस बात को हमारी संगति द्वारा प्रतिबिंबित होना चाहिए।